International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 883-886

भारतीय निर्वाचन प्रक्रिया में मतदाताओं का मतदान आचरण प्रथम आम चुनाव से अद्दतन तक

जितेन्द्र कुमार
आई.सी.एस.एस.आर. डॉक्टोरल फेलो, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
लोकतान्त्रिक व्यवस्था में नागरिक अपने मतदान के अधिकार के प्रयोग के माध्यम से सहमति प्रदान करता है तथा सरकार का निर्माण करता है। मतदान नागरिक का वह अधिकार है जिससे वह स्व–हित के संरक्षण और विभिन्न प्रकार के सामाजिक,आर्थिक और राजनितिक मुद्दों पर अपने राय व्यक्त करने का अवसर प्राप्त करता है। प्रत्येक चुनाव में राजनीतिक दल अपने प्रत्याशियों की विजय सुनिश्चित करवाने हेतु एवं सत्तासीन होने की लालसा के साथ अनेक प्रकार के प्रयोगों,प्रक्रियाओं एवं प्रचार माध्यमों के द्वारा निर्वाचन की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। मतदाता चुनाव और निर्वाचन प्रक्रिया के पूर्व अनेकानेक मुद्दों,समस्याओं और अपने प्रतिनिधिओं के व्यव्हार से प्रभावित होता है एवं इन सभी को अपने मष्तिष्क में संजोकर मतदान प्रक्रिया में भाग लेता है। भारत में निर्वाचन प्रक्रिया अनेक कारकों से प्रभावित होती है और निश्चिततौर पर यह देश,काल और परिस्थिति के अनुक्रम मं होती है। प्रथम आम चुनाव से लेकर सोलहवें आम चुनाव तक किस प्रकार मतदान व्यवहार परिवर्तित एवं प्रभावित हुआ और साथ ही उसने किस प्रकार भारतीय राजनीति को प्रभावित किया। राजनितिक दल और जनता के मध्य होने वाली चुनावी अंतर्क्रिया की तार्किक परिणति मतदान आचरण कहलाता है।

मूल शब्दः मतदान आचरण, राजनीति, शासन, लोकतंत्र, सरकार, चुनाव, जाति, क्षेत्र, अधिकार, समानता

प्रस्तावना
लोकतंत्र शासन की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रणाली है। लोकतंत्र समता पर आधारित एक शासन पद्धति है जिसमे सरकार निर्माण में विभेद रहित शासन की प्रत्याभूति है। समस्त उच्चता एवं निम्नता को हटाकर शासन के निर्माण में प्रत्येक नागरिक का सम्मलित होना लोकतंत्र की सर्वप्रमुख विशेषता है। लोकतंत्र के सिद्धांत का व्यावहारिक प्रयोग मतदान का अधिकार है। वस्तुतः मतदान का अधिकार एक सार्वभौमिक अधिकार है। यह लोक की तंत्र में सहभागिता को सुनिश्चित करता है। मतदान का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार है। मतदान का अधिकार लोकतंत्र की ऐसी विधा है जिसमे मतदाता अपने अंतस के विचारों को गुप्त रूप से व्यक्त करता है। मतदान एक अत्यांतिक अधिकार है। मतदान वाक् एवं अभिव्यक्ति का अधिकार है एवं निरपेक्ष अधिकार है, जिस पर राज्य, समाज एवं किसी प्रकार की शक्ति एवं सत्ता का प्रभाव नहीं होता है। लोकतंत्र में मतदान का अधिकार शासन में जनता की सहभागिता सुनिश्चित करता है। मतदान करने की स्वतंत्रता नागरिकों की युक्ति–युक्त प्रतिबंधों के साथ स्वतंत्रता है अर्थात मतदान का अधिकार लोकतान्त्रिक परिवेश एवं पर्यावरण में एक ऐसा अधिकार है जिसमे नागरिक गण सत्ता का निर्माण एवं जनवैधता प्रदान करते हैं। मतदान के माध्यम से बनने वाली सरकार सदैव उत्तरदायी सरकार होती है क्योंकि एक निश्चित कालखंड के पश्चात् सत्तासीन दल को पुनः जनादेश लेना पड़ता है। शासन पर जन–नियन्त्रण की प्रक्रिया ही लोकतंत्र है तथा इस सिद्धांत की प्रायोगिकता मतदान है अतः लोकतंत्र में मतदान व्यवहार एक महत्वपूर्ण तथ्य है। मतदान व्यवहार किसी देश अथवा राज्य में लोकतंत्र के मूल्य समता, स्वतंत्रता, समानता, विधि के शासन तथा संविधानवाद की स्थिति का परिचायक है। अब्राहम मास्लो ने इसी तथ्य को दृष्टिपथ में रखते हुए कहा है कि लोकतंत्र में मतदाताओं का आचरण इस बात को स्पष्ट करता है कि नागरिकों की सामाजिक, राजीनीतिक चेतना का स्तर क्या है। किसी राज्य के मतदाता यदि मतदान आचरण के माध्यम से सामाजिक, राजनितिक एवं सांस्कृतिक प्रश्न से प्रेरित होते हैं तो उस राज्य में लोकतंत्र की परिपक्व अवस्था का द्योतक माना जाना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

भारतीय राजनीति और मतदान आचरण
मतदान व्यवहार का अभिप्राय यह है कि मतदाता अपने मत के प्रयोग के समय किन तत्वों से प्रभावित होता है। इसमे यह भी समाहित है कि कौन सी मूल प्रवृति उसे मतदान हेतु प्रेरित और कौन सी निरुत्साहित करती है। इसके माध्यम से यह जानने का प्रयास भी किया जाता है कि मतदाता एक विशेष प्रत्याशी अथवा राजनीतिक दल की ओर क्यों आकृष्ट होता है। मतदान लोकतंत्र की नैसर्गिक प्रक्रिया है। सर्वप्रथम,फ्रांस में 1913 में मतदान व्यवहार का अध्ययन किया गया।
भारतीय जनतंत्र ऐसे सामाजिक संजाल का प्रतिनिधित्व करता है जो अनेक–जातीयता,अनेक भाषा–भाषी समूह,अनेक–सांस्कृतिक अधिष्ठानों,अनेक–मत–मतान्तरों एवं क्षेत्रीय अस्मिता के संयोजन का प्रस्फुटन है। यदि सामाजिक संरचना इस प्रकार से गुथी हो तो तत्संदर्भ में यह सुनिश्चित कर पाना आसान नही है कि नागरिकों के वोट डालने का आधार क्या है इस प्रकार के समाज में चूँकि सामाजिक प्रतिमान और प्रत्येक मुद्दे को देखने का नजरिया व्यापक पैमाने पर भिन्न है अतएव मतदान आचरण भी अनेक भागों में विभक्त होगा। चुनावी मर्मज्ञ योगेन्द्र यादव जी भारतीय राजनीति का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए इसके लोकतान्त्रिक राजनीतिक यात्रा के तीन विवरण पर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। योगेन्द्र यादव द्वारा तीनों विवरणों में प्रथम, रजनी कोठारी द्वारा प्रस्तुत अवधारणा कांग्रेस प्रणाली के रूप में जानी जाती है द्य यह विवरण यात्रा भारत में लोकतान्त्रिक ढंग से संपन्न हुए प्रतःम आम चुनाव के परिणाम स्वरुप कांग्रेस का बहुमतं के साथ सत्ता में आना और एक व्यवस्था की शक्ल में कार्य करना इसे एक प्रणाली के समकक्ष

खड़ा करता है। दूसरी, विवरण यात्रा योगेन्द्र जी 1967 के आम चुनाव से मानते हैं। इन चुनावो में राजनीतिक परिवर्तन का एक परिदृश्य शामिल हो चुका था। कांग्रेस का एकाधिकार टूट चूका था और कामराज एवं एस.के.पाटिल जैसे दिग्गज कांग्रेसी नेता चुनाव हर चुके थे। इसी दौरान क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उभार भी प्रारंभ हो गया था। तीसरी,विवरण यात्रा 1990 के इर्द–गिर्द प्रारंभ होती है जिसमे संविद सरकार व्यवस्था के प्रौढ़ होने, जातीय अस्मिता को प्रखरता के साथ राजनीति से जोड़े जाने और सांप्रदायिक राजनीति के स्पष्ट लक्षण दिखने शुरू हो जाते है।

भारत में अभी तक सोलह आम चुनाव संपन्न हो चुके हैं। भारतीय लोकतंत्र अनेक झंझावातों के मध्य, सामयिक परिवर्तनों के साथ सम्पूर्ण विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। भारत जैसे राज्य में मतदान व्यवहार अनेक विचारों एवं तथ्यों से प्रेरित होता है :

- स्वंत्रता आन्दोलन के मूल्य (परतंत्रता से विमुक्ति के साधन)
- विचारधारा (गाँधीवाद, राष्ट्रवाद, समाजवाद एवं साम्यवाद)
- विकास की राजनीति
- भाषा
- क्षेत्रीय अस्मिता
- राजनितिक दलों की लोकशिक्षण कला
- व्यवसाय
- परराष्ट्र नीति
- धर्म
- जाति

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन सम्पूर्ण रूप से प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र और व्यक्ति के नागरिक स्वतंत्रताओं पर आधारित राजनीति के प्रति प्रतिबद्ध था। स्वतंत्रता आन्दोलन के मूल्यों द्वारा राजनीति और राजनीतिक व्यवहार के प्रतिमानों को स्थापित किया गया। आरंभ से ही प्रमुख आन्दोलनकारी नेता, यथा– दादा भाई नौरोजी, गोखले, तिलक, गाँधी जी, जवाहर लाल नेहरु, सुभाषचंद्र बोस, सरदार पटेल, राजेंद्र प्रसाद आदि उच्चतम कोटि के नैतिक आचरण वाले व्यक्ति थे। अपनी शिक्षा, व्यवसाय एवं नौकरी त्यागकर, राष्ट्र के प्रति सर्वस्व समर्पित करने वाले राष्ट्रीय नेताओं ने उच्च नैतिक वयवहार का मानदंड स्थापित किया। सदैव सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता एवं अखंडता का संरक्षण, धर्मनिरपेक्षता, स्व–कर्तव्यों के प्रति निष्ठा,सत्य और अहिंसा जैसे तपों का आचरण, स्वदेशी के प्रति आह्वाहन इत्यादि राष्ट्रीय आन्दोलन के उद्दात मूल्य थे। आजाद भारत, राष्ट्रीय आन्दोलन के मूल्यों के प्रति अपने समर्पण भाव को बनाये रखने में सफल रहा और इसने आम भारतीय जनमानस के अंतर्मन को दीर्घकालिक समयावधि के लिए प्रभावित किया। इन मूल्यों का व्यपक भाग भारतीय संविधान में प्रतिस्थापित हुआ एवं अधिकांश राजनीतिक दलों ने अपने दल के कार्यक्रम एवं उद्देश्य सम्बन्धी दस्तावेजों में इन्हें सम्मिलित किया। भारतीय जनता ने इन मूल्यों का उपयोग सरकारों, पार्टियों और संस्थाओं की उपलब्धियों के मापन हेतु किया।

स्वतंत्रता के पश्चात 1952 में प्रथम आम चुनाव सम्पादित किये गए। इन चुनावो की सफलता ने भारतीय लोकतंत्र की मजबूती को वैश्विक फलक पर पहचान दिलाई और उन्हें भी जवाब मिला जो अस्थिर भारत का स्वप्न देखा करते थे। प्रथम आम चुनाव मूलतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ऐतिहासिक विरासत, उसके महान नेताओं के उच्च नैतिक आदर्शों एंव कर्तव्यों तथा स्वतंत्रता प्राप्ति की पृष्ठभूमि में संपन्न हुआ। पं. नेहरु जो कि स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम पंक्ति के नेतृत्वकर्ता थे, इन चुनावों में आकर्षण के प्रमुख केंद्र थे। आम भारतीय जनता के समक्ष एक ऐसी कांग्रेस को चुनने का विकल्प था जिसने उन्हें आजादी दिलाने में महत्ती भूमिका का निर्वहन किया था। जनता के सामने गाँधी, पटेल, सुभाष, तिलक जैसे कांग्रेसी नेताओं के आदर्श अधिक प्रासंगिक थे। 40,000 किलोमीटर तक की चुनावी यात्रा तय करने वाले पं. नेहरु को लोकप्रियता जादुई स्तर पर थी। अब्दुल कलाम आजाद, राजेंद्र बाबु, सी.राजगोपालाचारी, जी.बी.पन्त, जी. खेर, सरदार पटेल जैसे कांग्रेस को सशक्त नेतृत्व प्रदान किया। रियासतों का एकीकरण एक प्रकार से जनतंत्र की स्थापना का ही उपक्रम था। इस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन के मूल्य जो कि भारतीय जनता के मनोमष्तिस्क में गहराई तक पैठे थे के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रथम आम चुनम से लेकर 1967 तक अपना वर्चस्व कायम रखा। जनता के द्वारा मतदान करते समय स्वतंत्रता के मूल्यों को ध्यान में रखा गया और कांग्रेस के द्वारा इसे अपने चुनावी प्रचार के रूप में प्रयुक्त किया गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेश जब तक राष्ट्रीय जीवन मूल्यों को सहेजने में सफल रही तब तक वह भारतीय मतदाताओं के मध्य अपनीए लोक प्रियता स्थापित करने में सफल रही द्यधीरे–धीरे कांग्रेस राष्ट्रीय मूल्यों को सहेजने में असफल होती है, कोंग्रेस के पराभव प्रारम्भ हो जाता है। विभिन्न मुद्दों और समस्याओं के निर्धारण का प्रयास किया जाता है, तब लोकतंत्र के आधारस्तंभ के रूप में जनता इन मूल्यों के द्वारा आम जनमानस प्रभावित होता है और चुनावी प्रक्रिया में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करता है।

भारतीय लोकतान्त्रिक प्रक्रिया में विचारधारा का प्रभाव स्पष्तः परिलक्षित होता है। मतदान आचरण के दौरान विभिन्न प्रकार की विचारधाराएँ अपनी भूमिका निभाती है। गांधीवाद एक मूल्य भी है और विचारधारा भी जिसने मतदान प्रणाली को सम्यक रूप से प्रभावित किया है। राजनैतिकतौर पर गाँधी जी का रामराज्य एक पूर्ण लोकतंत्र है जिसमे रंग, जाति, सम्प्रदाय, के आधार पर भेदभाव समाप्त हो जायेंगे इसमें भूमि और जनता से जुड़ी विषयवस्तु है, न्याय त्वरित, पूर्ण, पारदर्शी और सस्ता होगा और इसलिए पूजा, भाषण एवं प्रेस की स्वतंत्रता होगी ... इस प्रकार का राज्य सत्य, अहिंसा पर आधारित होगा और इसमें हाशिये पर खड़े अंतिम व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित होगी गाँधी के दर्शन ने ही जय प्रकाश नारायण और अन्ना हजारे जैसे नायकों के सामाजिक, राजनीतिक सुधारों को संबल प्रदान किया निश्चितरूप से, इस प्रकार के गाँधीवादी आन्दोलनों, प्रतिक्रियाओं एवं संघर्ष शैली ने राजनीतिक परिवर्तनों को सशक्त आधार प्रदान किया और जनता के मतदान व्यवहार को प्रभावित किया जे.पी. के आन्दोलन के पश्चात् जनता पार्टी का सत्तासीन होना और अन्ना हजारे के आन्दोलनोपरांत राजग सरकार गठन महज एक संयोग नही कहा जा सकता है। गाँधीवादी विचार दर्शन ने लोकतान्त्रिक चुनाव प्रक्रिया में निरंतरता के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। मनरेगा, स्वच्छ भारत अभियान स्किल इंडिया जैसी योजनायें गाँधीवादी दर्शन पर ही आधारित हैं, जो कि विभिन्न तरीकों से मतदान व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

राष्ट्र के प्रति लगाव प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होता है और यह उसका भावनात्मक पक्ष भी है। प्रथम आम चुनाव मुख्यतः राष्ट्रवाद के तत्वों पर ही लड़ा गया। 1962, 1965,1971 और 1999 के युद्धों ने भारतीय मतदाता के मन में तीव्र राष्ट्रवादी अलख जगायी जिससे बाद के चुनाव प्रत्यक्षतौर पर प्रभावित हुए। प्रत्येक आम चुनाव में राजनीतिक दलों द्वारा गाँधी, नेहरु, पटेल, इत्यादि राष्ट्रवादी नेताओं के नाम पर वोट मांगे जाते हैं और स्वं को उनका वास्तविक उत्तराधिकारी घोषित किया जाता है, जिससे मतदान आचरण प्रत्यक्ष

अप्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित होता है। कहने का अभिप्राय यह है की राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रश्रय लेकर मतदाता के मैन को प्रभावित करें का प्रयास किया जाता है और चूँकि मतदाता भी भावनात्मक रूप से राष्ट्र से जुड़ाव रखता है अतः राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित होकर मतदान आचरण कारण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

भारत आजादी के आन्दोलन से लेकर वर्तमान तक समाजवादी विचारधारा का पैरोकार रहा है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना इस बात की तस्दीक करती है। समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व इसके मूल में हैं। नरेन्द्र देव, लोहिया, इत्यादि ने इस विचारधारा के माध्यम से सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन समतामूलक समाज के परिप्रेक्ष्य में किया। समाजवादी विचारधारा पर आरूढ़ होकर विभिन्न सरकारों ने अपनी नीतिओं का निर्माण किया और मतदाता के मतदान व्यवहार को प्रभावित किया।

भारतीय साम्यवादी विचारधारा, जिसका उद्भव मुख्यतः एम. एन. राय के विचारों में देखा जा सकता है य विभिन्न भारतीय क्षेत्रों में प्रभावी रही है। साम्यवादी दलों के गठन का आधार यही विचारधारा रही है। छतीसगढ़, झारखंड, प. बंगाल, उड़ीसा, केरल इत्यादि प्रदेशों में साम्यवादी विचारधारा के प्रचार के माध्यम से विशेषकर गरीब मतदाता के मतदान आचरण को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है। उग्र साम्यवाद अर्थात नक्सलवाद भी चुनावी प्रक्रिया में लोकतान्त्रिक व्यवस्था का विरोधी होने के वावजूद, चुनावी जीत प्राप्त करने का एक माध्यम बन जाते हैं। निश्चिततौर पर साम्यवादी विचारधारा ने मतदाता के मतदान आचरण को प्रायः नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

विकास एक ऐसी अवधारणा है जिसमे आधारभूत संरचनाओं का जैसे– बिजली, पानी, सड़क इत्यादि का समावेशन निहित है। कृषिगत सुधार, औद्योगिक ढांचे का विस्तार भी इसके अंतर्गत समाहित है। प्रथम पंचवर्षीय योजना (संतुलित विकास की प्रक्रिया का प्रारंभन) से बारहवीं पंचवर्षीय योजना (तीव्र, समावेशी और धारणीय विकास) तक सभी योजनाओं में विकास प्राथमिकता में रहा चुनावों के दौरान राजनीतिक दलों के द्वारा विकास को चुनावी मुद्दा बनाया जाता है। पं. नेहरु द्वारा भाखड़ा नांगल बांध को ईश्वरीय उपाधि दिए जाने से लेकर नरेन्द्र मोदी का गुजरात मॉडल चुनावों में जीत प्राप्त करने हेतुय न्यूनाधिक रूप में प्रयुक्त होता है। सोलहवीं लोकसभा का आम चुनाव मूलतः विकास बनाम अन्य के आधार पर लड़ा गया और राजगनीत गठबंधन अथवा 1989 के पश्चात् किसी एक राजनीतिक दल को बहुमत (भाजपा–282) प्राप्त हुआ। भाजपा की अगुआई वाले गठबंधन का आधार मोदी का विकास केन्द्रित प्रचार ही था जिसने आम जनता को नूतन भविष्य की दृष्टि पर आधारित मतदान करने हेतु प्रेरित किया।

भारत एक बहु भाषा–भाषी राज्य है। यह भारतीय समाज की विशिष्टता का प्रतीक भी है। भारत अनेक भाषाई क्षेत्रों में बंटा हुआ है। भारतीय संविधान अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत सहित 22 भाषाओँ को प्रमुख मानता है। उत्तर एवं दक्षिण की भाषाओँ में भिन्नता होना, भाषा को चुनावी राजनीति का मुद्दा बनाये जाने हेतु पर्याप्त कारण उपलब्ध करवाता है। भाषा के मुद्दे पर हुए आन्दोलनों ने हिंदी विरोध का स्वरुप धारण कर लिया और देश में हिंदी एवं अहिन्दी क्षेत्रों के मध्य टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गयी। 1952 में तेलगू भाषी आन्दोलन, भाषा के आधार पर राज्य के गठन के पक्ष में था। आन्दोलन के दौरान गाँधीवादी पोट्टी श्री रामालू के निधन ने इसे हिंसक बना दिया। इसी आधार पर आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा इत्यादि राज्यों का गठन हुआ। यह कहना अनुचित न होगा कि राजनीतिक दल भाषा के मुद्दे को उछालकर मतदाताओं को अपने पक्ष में करना चाहते हैं और मतदाता भी स्व–भाषाई अस्मिता की रक्षा हेतु ऐसे दलों को अपना मत प्रदान करते हैं। इसका सामयिक उदाहरण है 27 मई, 2014 को जरी सर्कुलर, जिसमे सभी मंत्रालयों, पीएसयू और बैंकों को अपने सोशल मीडिया एकाउन्ट्स पर हिंदी को प्राथमिकता देने की बात कही गयी थी। अनेक राजनीतिक दलों ने राजनीतिक कारणों विशेषकर अपने क्षेत्र के मतदाताओं को ध्यान में रखकर इसका विरोध किया।

भारत भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से विभिन्नीकृत देश है। आर्थिक कारक भी क्षेत्रीय अस्मिता का जिम्मेदार तत्त्व है। राजनीतिक कारणों से प्रादेशिकता की मांग होती रही है। राजनीतिक दलों का यह प्रतीत होता है कि यदि पृथक राज्यों का निर्माण और क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा को तुष्ट किये जाने में उन्हें सफलता प्राप्त हो गयी तन वे अपने दल को उस विशेष क्षेत्र में मजबूती से स्थापित कर पाएंगे। ' उत्तर हर दिन बढ़ता जाये, दक्षिण दिन–दिन घटता जाये ' के नारे के साथ द्रविड़ आन्दोलन प्रारंभ हुआ जिसने बाद में तमिलनाडु में डी.एम.के. और ए.आई.ए.डी. एम.के. को जन्म दिया। जिनका उद्देश्य ही यह था कि जन–भावनाओं के अनुरूप अपना राजनीतिक उत्थान किया जाये और चुनावों में मत व्यवहार को प्रभावित क्र सत्ता प्राप्त की जा सके। इसी प्रकार पंजाब हरियाणा ... हाल ही में तेलंगाना राज्य का गठन हुआ। किसी क्षेत्र विशेष के मतदाता के मतदान आचरण को किस प्रकार प्रभावित किया जाये। इसे दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान में समय–समय पर उ.प्र. में पूर्वांचल, हरित प्रदेश, बुंदेलखंड, महाराष्ट्र में विदर्भ, गुजरात में सौराष्ट्र इत्यादि राज्यों की मांग व्यापक पैमाने पर उठाई जाती है और चुनावो के दौरान मतदान व्यव्हार को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है।

किसी भी राजनीतिक दल के द्वारा अपनी नीतियों, कार्यक्रमों का प्रचार विविध माध्यमों से किया जाता है। जिन माध्यमों के प्रयोग के द्वारा जनसामान्य कोय स्वं की ओर आकृष्ट करने का प्रयास किया जाता है और मतदाताओं को शिक्षित करने का उपक्रम किया जाता है, उसे राजनितिक दलों की लोकशिक्षण कला कहा जाता है। नुक्कड़–नाटक, कद्दावर नेता के भाषण कौशल, प्रचार सामग्रियों के द्वारा, संसद में प्रश्न पूंछकर इत्यादि माध्यमों से जनता को शिक्षित करें का प्रयास किया जाता है। नागरिक जब मतदान प्रक्रिया में भाग लेता है तो वह उपर्युक्त सन्दर्भ में विचार के उपरांत मतदान करता है।

आजादी के पश्चात भारत के समक्ष सबसे बड़ी समस्या रोजगार की समस्या शी है। प्रत्येक आम चुनाव में रोजगार एक अहम् मुद्दा होता है। युवा मतदाताओं की अधिसंख्य चुनावी भागीदारी भी इसका प्रमुख कारण है। सरकारों के द्वारा विभिन्न प्रकार की व्यवसायपरक योजनाओं का संचालन, दूरगामी रूप से मतदान व्यव्हार को प्रभावित करने वाला साबित होता है।

किसी भी देश की वैदेशिक नीति का प्रभाव उसके नागरिकों पर पड़ता है। भारत सरकार के द्वारा संधि–समझौते, कूटनीतिक कदम, भारतीय नेतृत्व द्वारा भारत वैश्विक स्तर पर प्रतिनिधत्व किया जाना, युद्ध के समय सरकारी मशीनरी की सक्रियताय ये सभी बातें मतदान के समय मतदाता के लिए एक पैरामीटर का कार्य करती हैं। यदि सरकार की पर–राष्ट्र नीति सही दिशा में है तो उसे चुनावों के दौरान जनसमर्थन प्राप्त होता है, विपरीत होने पर सरकार को जनविरोध का सामना करना पड़ता है ? विपक्षी राजनितिक दलों द्वारा सरकार की परराष्ट्र नीति की आलोचना द्वारा मतदान आचरण को प्रभावित किया जाता है।

भारत एक बहुधार्मिक मान्यता वाला देश है। प्रत्येक धर्म के पैरोकारों के द्वारा स्वहित संरक्षण हेतु मुहिम चलाई जाति है, धार्मिक मान्यताओं को उभारने का प्रयत्न किया जाता है और धर्म के आधार

पर राजनितिक शक्ति प्राप्त करें का प्रयास किया जाता है। 1984 के सिख विरोधी दंगे, गोधरा कांड एवं आए दिन हिन्दू–मुस्लिम दंगे राजनीति के केंद्र बन गये हैं। चूँकि धर्म व्यक्ति की भावनाओं और दैनिक जीवनचर्या से जुदा विषय है इस कारण यह व्यक्ति के सार्वजानिक जीवन के आचरण को भी व्यापक रूप से प्रभावित करता है। मतदान प्रक्रिया में भाग लेने वाला मतदाता कहीं–न–कहीं धार्मिक भावना से प्रेरित होकर मतदान आचरण करता है।

भारतीय समाज जातिगत संरचना में विभक्त है। राजनीति और जाति एकदूसरे से गहराई से जुड़े हैं। इसीलिए जे.पी. ने कहा था के 'जाति भारत में एक महत्वपूर्ण दल है। भारतीय चुनाव में अभियान के समय जतिवाद को एक साधन के रूप में अपनाया जाता है और प्रत्याशी जिस निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहा होता है उस क्षेत्र में जातिगत मुद्दों को उभारा जाता है। प्रत्येक राजनीतिक दल का प्रयास होता है सम्बंधित क्षेत्र में अधिक जनसँख्या वाली जाति से ही प्रत्यासी खड़ा किया जाये और सुनिश्चित किया जाये कि वह अपनी जाति का सम्पूर्ण मत अपनी ओर आकर्षित कर ले। उ.प्र., विहार, हल में गुजरात इत्यादि राज्यों तथा केरल जैसे मार्क्सवादी साम्यवादी राज्य में भी जाति का सहारा चुनाव में जीत प्राप्त करने हेतु लिया जाता है। मंडल आयोग का गठन राजनीति में जाति का ही प्रयोग था जिसने भारतीय राजनीति की चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने वाले मतदाता को सर्वाधिक प्रभावित किया।

उपसंहार

भारतीय राजनीति के अंतर्गत चुनावी प्रक्रिया में मतदान आचरण सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रवृतियों से व्यवहृत होता आया है। जाति, धर्म साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद इत्यादि प्रवृतियों का प्रयोग बहुधा राजनीतिक हित की पूर्ति के लिए किया जाता है। समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति 'जाति विशेष' में आने के बावजूद तिरस्कृत रहता है। वह अपने अधिकारों को प्राप्त कर पाने में सक्षम नहीं हो पाता, वह सिर्फ वोटबैंक बनकर रह जाता है। वर्तमान में विकास जैसे बहुआयामी मुद्दे मतदान आचरण को प्रभावित कर रहे हैं जो कि लोकतंत्र की परिपक्वता का परिचायक है हालाँकि जाति अभी भी प्रभावी कारक है। मतदान आचरण यदि ईमानदार व्यक्तित्व, स्वच्छ छवि और आम नागरिक के आधारभूत विकास की संकल्पना से प्रभावित हो, तब इस प्रकार की राजनीतिक चेतना राष्ट्रीय राजनीति के साथ ही वैयक्तिक उन्नयन का कारक बनेगी।

सन्दर्भ

1. दि सक्सेस ऑफ इंडियन डेमोक्रेसी : अतुल कोहली
2. पालिटिक्स ऑफ इलेक्शन रिफोर्म इन इंडिया : जे. के. चोपड़ा
3. इलेक्शन इन इण्डिया : आर. पी. भल्ला
4. रिलीजन, कास्ट एंड पालिटिक्स इन इण्डिया : क्रिस्टोफ जफरलोट
5. इलेक्ट्रोरल रिफार्म इन इण्डिया एंड हीड्स : अमनदीप कौर
6. इण्डिया एट द पोल्स : पार्लियाँमेंन्ट्री इलेक्शन इन द फेडरल फेज : एम् पी सिंह एंड रेखा सक्सेना
7. भारत में राजनीतिक प्रक्रियायें, सम्पादक : बी एन चौधरी
8. लोकतंत्र के सात अध्याय, सम्पादक : अभय कुमार दुबे
9. 'कायापलट की कहानी रू नया प्रयोग, नयी संभावनाएं, नए अंदेशे' : योगेन्द्र यादव
10. लोकसभा चुनाव, गणित एवं निहितार्थ में प्रतिमान : राहुल वर्मा एवं नरेश गोस्वामी
11. भारत का सविधान : सुभाष कश्यप
12. भारत में जातिवाद : रजनी पाम दत्त
13. भारत में शासन प्रणाली : गाँधी जी राय, भारती भवन पटना
14. मेजरिंग वोटिंग बिहेविअर इन इंडिया : संजय कुमार
15. पॉलिटिक्स ऑफ रीजन एंड रिलिजन इन इंडिया : पी.के.दत्ता
16. पॉलिटिक्स इन इंडिया : रजनी कोठारी
17. वोटिंग बिहेविअर इन चेंजिंग सोसाइटी : एस.पी वर्मा एंड इकबाल नारायण
18. कास्ट एंड वोटिंग बिहेविअर : ओ.पी. गोयल
19. इंडियन एक्सप्रेस, द हिन्दू, दैनिक जागरण एवं जनसत्ता जैसे समाचार पत्रों के लेख